

श्रीः
श्रीमते रामानुजाय नमः
श्रीमते निगमान्तमहादेशिकाय नमः
श्रीसीतालम्हणभरतशक्रहनुमत्समेत श्रीरामचन्द्र परब्रह्मणे नमः

श्रीमद्रामायणे राल्मीकीये आदिकार्ये सुन्दरकाण्डे

॥ त्रयोविंशः सर्गः ॥

This document has been prepared by

Sunder Kidāmbi

with the blessings of

श्री रङ्गरामानुज महादेशिकन्

His Holiness śrīmad āṇḍavan śrīraṅgam

श्रीः

श्रीमते रामानुजाय नमः

श्रीमते निगमान्तमहादेशिकाय नमः

॥ त्रयोविंशः सर्गः ॥

राम्फसीभिः सीतायाः प्रबोधनम्

इत्युक्त्वा मैथिलीं राजा रारणः शक्ररारणः।
सन्दिश्य च ततः सर्वा राम्फसीर्निर्जगाम ह ॥ 5.23.1 ॥

निष्क्रान्ते राम्फसेन्द्रे तु पुनरन्तःपुरं गते।
राम्फस्यो भीमरूपान्ताः सीतां समभिदुद्रुः ॥ 5.23.2 ॥

ततः सीतामुपागम्य राम्फस्यः क्रोधमूर्छिताः।
परं परुषया राचा रैदेहीमिदमब्रुवन् ॥ 5.23.3 ॥

पौलस्त्यस्य ररिष्ठस्य रारणस्य महात्नः।
दशग्रीरस्य भार्यांरं सीते न बह मन्यसे ॥ 5.23.4 ॥

ततस्त्रेकजटा नाम राम्फसी राक्यमब्रवीत्।
आमन्त्र्य क्रोधताम्राम्फी सीतां करतलोदरीम् ॥ 5.23.5 ॥

प्रजापतीनां षष्ठां तु चतुर्थोहयं प्रजापतिः।
मानसो ब्रह्मणः पुत्रः पुलस्त्य इति रिश्रुतः ॥ 5.23.6 ॥

पुलस्त्यस्य तु तेजस्वी महर्षिर्मानसः सुतः।
नाम्ना स रिश्रवा नाम प्रजापतिसमप्रभः ॥ 5.23.7 ॥

तस्य पुत्रो रिशालाम्फि रारणः शक्ररारणः।
तस्य ९रं राम्फसेन्द्रस्य भार्या भरितुमर्हसि ॥ 5.23.8 ॥

মযোক্তং চারুসর্বাঙ্গি রাক্যং কিং নানুমন্যসে।
ততো হরিজটা নাম রাক্ষসী রাক্যমব্রবীৎ ॥ 5.23.9 ॥

বিরৃত্য নযনে কোপান্মার্জারসদৃশেক্ষণা।
যেন দেরাস্ত্রযস্ত্রিংশদ্ দেররাজশ্চ নির্জিতঃ ॥ 5.23.10 ॥

তস্য ঔরং রাক্ষসেন্দ্রস্য ভার্যা ভরিতুমহঁসি।
রীর্ঘোৎসিক্তস্য শুরস্য সঙগ্রামেষ্ট্রনিরর্তিনঃ।
বলিনো রীর্ঘযুক্তস্য ভার্যা ঔরং কিং ন লিঙ্গসে ॥ 5.23.11 ॥

প্রিয়াং বহুমতাং ভার্যাং ত্যক্হ্বা রাজা মহাবলঃ।
সর্বাসাং চ মহাভাগাং ঔরামুপৈষ্যতি রারণঃ ॥ 5.23.12 ॥

সমৃদ্ধং স্ত্রীসহস্রৈশ্চ নানারত্নোপশোভিতম্।
অন্তঃপুরং তদুৎসৃজ্য ঔরামুপৈষ্যতি রারণঃ ॥ 5.23.13 ॥

অন্যা তু রিকটা নাম রাক্ষসী রাক্যমব্রবীৎ।
অসকৃদ্ ভীমরীর্ঘেণ নাগা গন্ধর্দানরাঃ।
নির্জিতাঃ সমরে যেন স তে পাশ্ৰ্ৰ্ণমুপাগতঃ ॥ 5.23.14 ॥

তস্য সর্সমৃদ্ধস্য রারণস্য মহাত্মনঃ।
কিমর্থং রাক্ষসেন্দ্রস্য ভার্যাঔরং নেচ্ছসেহধমে ॥ 5.23.15 ॥

ততস্তাং দুর্মুখী নাম রাক্ষসী রাক্যমব্রবীৎ।
যস্য সূর্যো ন তপতি ভীতো যস্য স মারুতঃ।
ন রাতি স্মায়তাপাঙ্গি কিং ঔরং তস্য ন তিষ্ঠসে ॥ 5.23.16 ॥

পুষ্পবৃষ্টিং চ তররো মুমুচূর্যস্য রৈ ভযাৎ।
শৈলাঃ সুক্ষরুঃ পানীযং জলদাশ্চ যদেচ্ছতি ॥ 5.23.17 ॥

তস্য নৈরূতরাজস্য রাজরাজস্য ভামিনি।
কিং ৎরং ন কুরুষে বুদ্ধিং ভার্যার্থে রারণস্য হি ॥ 5.23.18 ॥

সাধু তে তত্ত্বতো দেরি কথিতং সাধু ভামিনি।
গৃহাণ সুস্মিতে রাক্যমন্যথা ন ভরিষ্যসি ॥ 5.23.19 ॥

॥ ইত্যর্ষে শ্রীমদ্রামায়ণে রান্মীকীযে আদিকাৰ্যে সুন্দরকাণ্ডে ত্রয়োবিংশঃ সর্গঃ ॥